पाठ- 15 “अंधेर नगरी” (लेखक : भारतेंदु बाबू हरिशचंद)

शब्दार्थ

शब्द-अर्थ	शब्द-अर्थ
• भोग – भगवान को अर्पित किया जाने वाला भोजन	• फरियादी –प्रार्थी, गुहार लगाने वाला
• शालिग्राम –काले रंग का छोटा गोल पत्थर,जिसे विष्णु मानकर पूजा जाता है|	• नेपथ्य –पर्दे के पीछे
• सेर –एक पुरानी तोल(आज के लगभग 800 ग्राम के बराबर)	• न्याव –न्याय
• सीधा –ब्राम्हणों को दी जाने वाली कच्ची खाद्यसामग्री-	• बोदा –कमजोर
• टका –दो पैसे का सिक्का	• आशना –प्रिय
• मिटावत –मिटाता है	• भिश्ती –पानी वाला
• मान –मर्यादा, प्रतिष्ठा, सम्मान	• मशक –पानी भरने का चमड़े का थैला
• अमला –कर्मचारी वर्ग	• दरबार बरखास्त –सभा समाप्त
• अजीरन –अजीर्ण, अपच रोग	• ढेर –बहुत सारा
• कुंजड़ीन –सब्जी बेचने वाली	• सवारी –जुलूस की शक्ल में निकलना
• मुरई –मूली	• धूम से –शान से
• निनुआ –तोरी, तुरई	• इंतजाम के वास्ते –प्रबंध करने के लिए
• मसखरी –मजाक	• बरखास्त –समाप्त
• स्मरण –याद	• अरण्य –जंगल, वन